

१०९  
५

Shringar Shala.

॥ शृंगारशाला ॥

हस्ताक्षरितस्य च  
सामय -  
संवत् १८५५

सर्वस्वर पुष्पी ला  
शृंगारशाला

109 ✓  
1

109  
1  
2148



**श्री शिवो विजयते तस्य ॥** ॥ नंदे संदेहं संदेहं मंदी कुरुणा भास्वरं ॥ गत्व संदेसं द्विपानं पं श्री मदिंद्रमणिं गुरुं  
 ॥ ॥ १॥ ॥ रुचिहृतं न कुरु सुभा निहृतं निशुं भा निहृतं सुभा सा ॥ ॥ रुचिजितं कुंजं कुरु भा कुरु मधु कुंजा पुनातु कुंभा सा  
 ॥ ॥ २॥ ॥ श्री वीरमायाः कवितात्मजत्वा चिदेदो हा हा मणोः सुजन्मा ॥ ॥ सपेश्वरः सत्कविमो दशा हां भृंगारशा हां  
 तनुते मुदे मां ॥ ॥ ३॥ ॥ रसा हवा हा मधुरा विरा हा शा हा गुण नां विजित प्रवा हा ॥ ॥ कतिर्मे दीपा तु कृतै रुशा हि  
 नी तनो तु मो पं सु कृतै रुशा हि नां ॥ ॥ ४॥ ॥ ॥ अथातः भृंगारशा हा निरूप्यते ॥ ॥ भृंगार मं जु हा मसार मणि प्रच  
 द्वा सधार नाय कर्मणिः सुरतै रुमित्रं ॥ ॥ रत्याः पयोधर पुंगं कृत पन कुरु भा भृंगारिणो मतनुता मतनु मुपं वः ॥ ५॥ ॥  
 जपति मरु कुरुः श्री नितै कृतै रुकेतुः परतर सुख हेतुः कांति रत्नै रुसेतुः ॥ ॥ सुरी पु पुजे तुर्धन नेतुः परोऽन्यः  
 कुरु कुरु सुमयाणा यस्य पे तुर्धन पीलम ॥ ॥ ६॥ ॥ परन पन निपाते किं विपा कुंचितं सत्कृतित हा हित हा जं  
 जै चमस्मरस्या ॥ ॥ तदनु पुन रपांग चोत ता रं नितानं जपति चकितं कांता हो कृतितं हो रुसा रं ॥ ७॥ ॥  
 न कुरु हा कुरु हा पत हो चने तपतु हा मय ते मय वैरिणः ॥ ॥ सुरपते रपिते रमणी मणी रवि सरो जट  
 शस्तु हनां रुपां ॥ ॥ ८॥ ॥ चुट्नु का हा रं सपतित रुच भा रं च रुच यो पुगे ना रं सारं प्रिय मुरा सि सं वी प्रस  
 रं ॥ ॥ मदा धूर्ति ता रं च पतत रसा रं गन पना दृष्टा हो षं रुत्ता मप पति च मो पं चत नुते ॥ ॥ ९॥ ॥ ॥

इषार स्मर मुरार विंद मधुरं नेत्य र्ध जा प्र्मा चुरी सं मिश्रं घत कंठ वा हु हा हिकं वक्षो मि हा वक्षसा ॥ ॥  
 गा हा हिं गत मेत पति पदि चेत्ता मं कुरुं गी दृशः सौ र्यं स्वर्ग गतं तदा नुरु हा पे रत्यै कनी यः स रे ॥  
 ॥ १०॥ ॥ कौ सुं ते न च कुरु कुरु रुचिरा वा छा घ व क्षो र हो वि सि ता हा कुरु व ह्दरी परतनु भ्यं हा त कें  
 कां व ॥ ॥ रत्तां भोज मुरा वी सुरा म मपना प्रत्ये प विं दू ज्वला रत्यं ते रा यना जि ता सि विषयं  
 भू पो पि हा या स्पति ॥ ॥ ११॥ ॥ गा हा हिं गत तः सरो रु दृशः श्री मं डि ता र्त्री मणे विं सि ता हा कुरु  
 व ह्दरी विगा हि ता मु ता व ही रं डि ता ॥ ॥ स्त्रि का हे स्मर भूप रा सन परत्ये पं व सं ते न किं पू नो च  
 क्षति पाति ता सु मन सा व र्ध व सं शो भते ॥ ॥ १२॥ ॥ अकारणा विः कृत मं द हा सं वि मुक्त केशा व  
 द्वि म डि ता न नं ॥ ॥ मुदे मदा धूर्ति तने न भृंगं मुरार विं दं मदि रा य ता क्षपाः ॥ ॥ १३॥ ॥ लपति  
 रा गि प्रमदे मपति गं घु नो ति चेतः क्रिय ती ति वा ती ॥ ॥ ने चार विं दं तर संग तं यत् कुरु र विं  
 पं न पु नो ति चित्तं ॥ ॥ १४॥ ॥ पद प्रवा हे न वि हो चने न मुरे पु ना ते स्वरु चा व त र्जिता ॥ ॥  
 प्रवा हा शा हा च कुरुं ग हा हा सरो ज मा हा व न मा वि वे श ॥ ॥ १५॥ ॥ प्रा ची व धं रा ग व ती कुरु वि



कृत्वा कर्मभोगमदं प्रकाशम् ॥ ॥ अरं म साप्ताशु निरुत्तमिधुः समिहन्तः किं तपनस्तपे  
 दा ॥ ॥ १६ ॥ ॥ विमुच मं दारतं मिहिंदत वज्रपाणे स्तरुपुग नो यं ॥ ॥ त तत्र गंतुं समयोऽधु  
 नाऽऽस्ते स्युः कंदरुस्य विनायकपक्षं ॥ ॥ १७ ॥ ॥ केतकी कुंजमन्विष्यान्विष्यया स्पति पंचतां ॥ ॥  
 न प्राप्स्यति मिहिंदतं मा हती मुकुटोपमं ॥ ॥ १८ ॥ ॥ शफामा समेतिसमयात्मकमात्मगे हं हं च  
 कृत्वा कदापि तां त्यज चक्रा की ॥ ॥ प्रातः पुनस्तत्र मन्विष्यति संगमोऽस्या विष्ठागमै सति यतः फलुका  
 यं सिद्धिः ॥ ॥ १९ ॥ ॥ श्रीरक्षीरपृथ्वी तनयराः संचारि पद्मा विजापत्य स्या द्दहने च मानससरो वासे  
 मनोहारि पत्र ॥ ॥ स्वीयं देशमपा स्य चान्यविषये संचारिणो हारिणस्तत्ते हंसपुरा रायेन विधिना  
 काकैः समंता स्पते ॥ ॥ २० ॥ ॥ कुंदेषु मंदमुपगम्य मधूनि पीत्वा नीत्वा सुगंधमम हं च कृत्वा ज  
 तीनां ॥ ॥ पीता रविंदमकरंदमिहिंदतं चो नो हज्जते किमुकरी रर संविचिन्त्यन्ता ॥ ॥ २१ ॥ ॥ पेना रविंदेषु

२







तीव्रशोतास्यपितृवित्तोक्तोपमानपागापमानुजीविनीयायाचक्रोपमाननुतेपोगरमासमाकापिसमान  
नायाःसमाननायातिसमानतापागागशिरीषपुष्पाधिकोमहेनपदामहेनैतुरुपेन्निकुंजेमगदाममाधे  
चर्मोपमाननुताहेपापातुंगोस्तनौतेयसुधारमायाःसुधाधरास्येयसुधाधरीपतःसुधाधरीपत्पम  
हंमुविंचस्यादेधरतिपिसुधाधरीपतिगगर्भागपथाकागगुजंगमीयेतिकयाहयातेकुचद्वपीता  
हफ्तीपतीपासुधाधरीपत्पधरोऽतिमिषष्टिविहोकीपसितत्यप्रेतिःगगर्भागपथाकागग  
राचीयेत्पागायेसुतनुतनुकांत्याचसुमनोचक्रपेत्पाकक्रंतवराशधरीपत्पतिसुकागगपिशाहत्तेनेच  
द्वितयमरविंदीपतिकुचद्वपीयेत्तत्येकनक्रुहरीपत्पतिक्रहोगगर्भागविष्वपिउपमेपकाचक्र  
नुतागगगुजंगकोताकुपिहाहकोताकुरंगकोतानपनातिकोतागमनोमदीपेहृदपंगमासागमागमे  
उपमाकापयामतिनिरूपणमिदंरुतागशोधनंसुधियःसर्वकुर्वतेदयाःसदागगगगीगुरुयसांशर  
रागगकोतास्यकोत्याजितकामकोताकोतात्यमेकात्यमिवातिकोतागगकामेषुकोतास्तवलोचनोता  
स्वहृत्तोचनोताइत्यन्यिकोताःगगगगग

जिंदु सं दोहपानं विहितं वसंते ॥ १ ॥ हांतं ते नैव मिहितं दफ्तरा करीर पुष्पे विहितं स्वच्छिता ररा ॥ २ ॥ हीनेप  
 फो शिशिर समये नैव ते वंचरी काः पक्षा भाग व्यथित मनसस्तो धिता यत्न रं देः ॥ ३ ॥ कुंदे नैमाः कुसुम निवयाः  
 संति शिंतलका रातस्मा ज्जाता जहितं हहिता पुष्पिता कीर्ति रास्ते ॥ ४ ॥ पयार सन पान पान पविधा  
 न पातान पामरा हत न पाधरा न तर सज्ञ पाविज्ञ पा ॥ ५ ॥ पयो जहति पा कृता विमहो मे किका नां धि पात पा  
 पिततया दपा पीत वा पसी कांक्षी स ॥ ६ ॥ ना हा ज्ञा हां तु जि तज्ञ हां ज्ञा सूत ज्ञा हां च वि भा पि शा हां ॥ ७ ॥ रसा हरा  
 हा ज्ञा मदै रुशा हा रसा ज्ञा लं च फलं तयैव ॥ ८ ॥ रसेन पा धं कु सु मे न का ध्यं द ले न सं पा ध न का स नं च ॥ ९ ॥ समा ग  
 ता या जति ये पे ज पे ज्जा की ता न धा की र्ति रियं तयैव ॥ १० ॥ पंचा नने पंच रा रु ज्ञ पंच प्र पंच प नं च ति पंच तां च  
 त्र ॥ पंची रुत ज्ञा जल पंच म्हे पंचा नने दोष विधिं वेद ॥ ११ ॥ क्रोधा हा वये ता सि ये न मे त र का धा ज पः क्रि स  
 रु हा मनुष्याः ॥ १२ ॥ दपा हा न स्ते सु चितः स्व दा से दपा हा नः श र्व य तः स्व तं च ॥ १३ ॥ गुण वता सह संग ति रुत मा  
 ज न पति प्र म दं गु र तां न र्णा ॥ १४ ॥ कु सु म दाम सु सं ग ति तः स्फुरं शिर सि सू च मु पे ति म हा त्म नां ॥ १५ ॥ न जे तु मी रो  
 पु र प मे ष चं प्रो न तां दि नं सो द प म स्त मा ॥ १६ ॥ को का हा पी स्वा ज्ञा पि नं वि जे तं रा को ऽ ज्ञ म ज्ञं ज प ति ध्रु व श्व  
 ॥ १७ ॥ का पा प हा जा हा मी र व स्प नी ज ल हे तुं ल ह स्त म हां स्य ॥ १८ ॥ प्र भु र्य दि स्वा म हा म शु दु ष जि का सु क र्क



विराजते ॥ ॥ यो ग्वापञ्चाक्षये रास्य पञ्च हस्तस्य ते प्रभो ॥ ॥ ३॥ ॥ अनुभवाभिद रूपकमिदं ॥ ॥ एवं जनादं जनात्ते  
 रम्यं मयेऽक्षिरं जने ॥ ॥ जं जने कुरुमासूनां तत्कदा देण्डुं दारि ॥ ॥ ४॥ ॥ अधिकताद्रूप रूपकमिदं ॥ ॥ अदक्ष संभवा  
 द्वा सती पमपरा सती ॥ ॥ सती कुलैकाभरां कुलं भवति स्वर्गं ॥ ॥ ५॥ ॥ नूनताद्रूप रूपकमिदं ॥ ॥ तन्मे भवते संदृष्टि  
 पक्षेन कुरुोदरि ॥ ॥ अथ रश्मिपितृये ते सुधा रूपोऽस्तु तत्सुधा ॥ ॥ ६॥ ॥ अनुभवताद्रूप रूपकमिदं ॥ ॥ उदाहरणं  
 त रागि पथा क्रमतः ॥ ॥ सरोजं तापतलोचनं तो मनोजं तात्वमतीव कोता ॥ ॥ रतांते तांतामपनो ज्यलांता क्रमातिरां  
 तामुदमादधासि ॥ ॥ ७॥ ॥ इपं स्वतं नीकृतं पंचयागं मंची भवन्मं जुगारो निपंची ॥ ॥ विने पतं चै रसना विपंची पंची कृतं पं  
 चममातनोति ॥ ॥ ८॥ ॥ सरोजपथापत होचनं तो मनोजं एवापममंगं मंगं ॥ ॥ विधापया हा प्रतरीति भंगं निधापसंगं तनु  
 ते स्वरंगं ॥ ॥ ९॥ ॥ मनोहरा पंच सुधा रमा पंच सुधा घरा पंच निरीक्षिता पंच ॥ ॥ निरीक्षितेऽस्याश्च मुखारविंदे किं वाऽरविंदे  
 न सुधा घटपया ॥ ॥ १०॥ ॥ अदक्षजा दक्षसुता परे पं सती लती रीति रत्नानतांगी ॥ ॥ तदंष्ट्रि पक्षं गुलि चंद्र विंदे दृष्टे तु पक्षेन  
 क्रिमिं दुना किं ॥ ॥ ११॥ ॥ अथ रविं च मिदं तव रं डितं वददं विं डित मे वरतं पुनः ॥ ॥ सुतनु विं च मयं डित मप्य हो निज ह्वा सवि  
 रं डित तीति किं ॥ ॥ १२॥ ॥ निज ह्वा कुरुते सवि रं डितः इति शपाठः ॥ ॥ पथापया ॥ ॥ रं डी करोति सवि रं च मयं विं डितेन  
 रं डित मप्यो च रविं च मेतत् ॥ ॥ आयेदपत्यपि रतां त नितं ततां ते कांते त्वरं डित रतानि जतानि कुं जे ॥ ॥ १३॥ ॥ इति रूपकं ॥

॥ ५॥

माप

राचालता हिं गित मं जुमर्तिः श्रुति प्रजाराधित का रूपः ॥ ॥ कृहिंद कन्या तट संगतो पंपुना तु मां रफामत मा लशालः ॥ ॥ १४॥ ॥  
 इति परिणामः ॥ ॥ तनु लिषा हिर्मधुर्मा च जीति हं सीति गत्या कृत हं स एषः ॥ ॥ निरीक्ष्य नेत्रे भवती कुलं गी त्वपं सु रंगो  
 मनुते मनस्तः ॥ ॥ १५॥ ॥ रूपे रतिः सा सुतनुः सती प्रते सती विपंची वचन प्रपंचे ॥ ॥ तिजेत मा के निज ला सुचे तो हरा  
 नचे तो मम सं जताति ॥ ॥ १६॥ ॥ इत्यु ह्ये रः ॥ ॥ हचि प्रशस्ता म रविं द हस्ता मा लो क कस्ता म हि मां शुजा पाः ॥  
 ने निःसरं ती स्म रति स्म रतः सिंधोः प्रयातो सरमा रमांतां ॥ ॥ १७॥ ॥ इति स्मृतिः ॥ ॥ मरकत मणि गो हस्पो र्वं दे शो च  
 हं ती मित पत पदिते दुःश्री समाना स्य रोभां ॥ ॥ कुपल पद जने चां गी र्वप चे तो न कस्व भ्रम ति ज ह दं दे पि शु दे षे ति  
 पूनः ॥ ॥ १८॥ ॥ इति भ्रंति मान् ॥ ॥ क हा हि मां शो रम हा कि मे षा ऽ व ला रती रा स्य हि वा कृ ला ता ॥ ॥ च्युतो  
 रसः किं नुरा पते री रमे ति ने निर्णय मे ति चेतः ॥ ॥ १९॥ ॥ इति स सं देहः ॥ ॥ क हा नि धौ नै व कृ लं ह्ये रपा  
 कृ हा ति धौ स्य कृ ला नि ये स्ते ॥ ॥ पराजित स्या स्य सरोज ने चै दे चै ऽ प राः शपा म हि मा वि भा ति ॥ ॥ २०॥ ॥  
 तना स्य कां त्या नि जि ते सुधा च रे सुधा च रे ऽ पे जति भा ति नी जि मा ॥ ॥ राशः कुरंगो ति ज रा त्म ना मि ति भ्र  
 मो पितं तत्र न सं स्थि ति स्तयोः ॥ ॥ २१॥ ॥ ने पं कां ची मे जु मुक्ता नु पं चा चे तो पं चा मि च किं तर्हि कां ची ॥ ॥  
 कां ता कां ची ता दृ शी स जु ण ता ने चा नं दे जी क्षि ता सं वि च ने ॥ ॥ २२॥ ॥ मनो हरो पं तु मनो भिरामो मनो भ्र



दंतततमातनोति ॥ तन्माधवः किंचित्तु ज एष नमाधवो पंचजरा ज एषः ॥ २३ ॥ **॥ श्रीं तापपुतिः ॥**  
 गोपिकावनविकाराकारको गोकुलं सुरपतिधुनं दत्ते ॥ ॥ किं हरिः कुसुमशालिमाहितो नातिपालित कुशालि  
 रं पुदः ॥ २४ ॥ **॥ श्रीं तापपुतिः ॥** ॥ पातस्य व्रजमंडला न्मधुपुटी विहो वियोग न्मयाततामि हरिं मंतराज  
 ममुना त्यागोऽधुना स्पोचितः ॥ ॥ इत्यासी रवधू मिरात्महृदपा निःकृतिताऽनादरात् भृगा रो विजुह्वस्य सौर  
 विलुता नीरद्वजा इतले ॥ २५ ॥ **॥ श्रीं तापपुतिः ॥** ॥ निजकल्पनपाभ्यां तिः कल्पितं त्वां तपपुतिः ॥ ॥ ये  
 रीपनजय किं मां हं सिमार हं कुधा ॥ २६ ॥ **॥ यथाया ॥** ॥ नेमाः कलातुतव हो न क हं रु एष खे डी बुधा विज  
 पतिभ्रमतो मुधाऽमी ॥ ॥ एतं न मंति निगदंति सुधाधरो य म स्यामि धामिति मुधा विमुधा ज्ञापित्वः ॥ २७ ॥  
**॥ ॥ इत्यपुतिः ॥ ॥ इति श्री भृंगारशाहा पां तृतीयांशः समाप्तः ॥ ॥ ॥ अथ षष्ठेऽंशे निरूप्यते ॥**  
**॥ श्रीं तापपुतिः ॥** ॥ फलोत्प्रेक्षा ॥ ॥ हेतुत्प्रेक्षा ॥ ॥ आधा ॥ ॥ आनुत्प्रेक्षा ॥ ॥ सिद्धा ॥ ॥ आसि  
 द्धा ॥ ॥ उदाहरणानि ॥ ॥ गुरो न युक्ता स्तवचा ह मुक्ताः सेवानि युक्ता हि मरस्मिन्नेष ॥ ॥ ताराज्जैवैम्या स्पधि  
 निर्जिते दुदारा नुदारा न ह मायतासि ॥ १ ॥ **॥ उक्ता स्पदा वस्तुत्प्रेक्षा ॥** ॥ यथाया ॥ ॥ आत्वं पस्माः शारदंशी तरास्मि  
 शं केताराभ्या ह हारान्पदीयान् ॥ ॥ चंद्रस्य चंद्रं चंद्रो भोज्यतां तं कीर्तिमन्ये चंद्रिकां चंद्रमौहतेः ॥ २ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ६ ॥

यो ५

राचेव च न्यास्ति रमा रमेव राधा न गणपति व्रजमंडलेऽस्मिन् ॥ ॥ मही न मान्योपि मही मही कान्धदं विपक्षे शिरसाभ्य  
 वेति ॥ ॥ यथाया ॥ ॥ लतेव हे मी त्वमती व कंता जता तिम्रदी त्वमि का यभाति ॥ ॥ स्तनद्वयीते स्तनद्व  
 यीयस्तनद्वयीवस्तव रुद्वयी च ॥ ॥ इंदी न रंत व विलोचन तुल्यमेत द्वाले विभाति वदनो पममिंदुवि  
 यो ॥ ॥ जंघा समासुत नुराजति हे मरभा रंभा प्यरं जगति भाति समा लयेव ॥ ॥ ॥ ॥ दर्पेन दर्पं रु कुरुत्व  
 मुरुत्व कोत्पा कोत्पा लमस्तव समः सतमा लकोतः ॥ ॥ ये वी ह्यते दपिते मिता मितजी राधा रुदं यकुल  
 मीयति तातनुं स्वं ॥ ॥ ॥ ॥ मागामंस्त नुरुचा सुतनु त्वमित्थं त्वनुत्पता मुपगता ॥ ॥ तनु क्रांतिनी य ॥ ॥ जि  
 वी फलं त्यदचरो पम मस्ति को ते को ते म धौ न रुमान मये त्वको ते ॥ ॥ ॥ ॥ तया धरसमा सुधा सुमुखि य  
 क्रतुह्यः सुधाधरोस्ति य सुधा ज नो व दति वाच मेतां मुधा ॥ ॥ मदां धगिरि विश्व से त्क इव को रुता क्षी राची नहि  
 त्वदुपमेति यद्विदित मेव हो रुचये ॥ ॥ ॥ ॥ सा वीक्षिता चेत्कुचयो र्वी सा तस्या श्र्य जंघावित पीतथैव  
**॥ ॥ इति प्रतीपं ॥ ॥ इति श्री भृंगारशाहा**  
**याद्वितीयांशः समाप्तः ॥ ॥ ॥ अंगं स्वीकृत्य क्रामे पं सं मो ह पति मान सं ॥ ॥ वैपरी तं व्रजे पश्य किं करोमि क**  
**पाप्म हं ॥ १ ॥ ॥ अयि कानेद रूप कृमि पं ॥ ॥ विना निमेष मेवाऽऽसे हे रजधीश जरांगना ॥ ॥ संगीत मं गी**  
**रुते जी एत त्री विना प्यसे ॥ २ ॥ ॥ न्यूना ते द रूप कृमि पं ॥ ॥ इयं पद्मा लका सा क्षा तप क्षा हस्ता**



सुधाधरेतन्नि सुधाधरेतांनुधामुधाऽमी भ्रमते न दंति ॥ १०॥ ॥ इदं सरोजद्वितयं मनोजरती बुधुग्मं न सरः सरो  
 जं ॥ ॥ १०॥ ॥ **भेदकातिशयोक्तिर्पथः ॥** ॥ अन्वेषेय शोभा घतवाननस्याऽधरेऽन्वेषेय घवरोरु रूपं ॥ ॥  
 अन्वेषेय संभासि विभासितांगी हास्यंत वाऽन्यत्किमुकारणं तत् ॥ ॥ ११॥ ॥ **संबंधातिशयोक्तिर्पथः ॥**  
 जितो मुखेन त्वरुचा कलं क्रीकृतोऽस्तमेष्पत्यचिरेण चंद्रः ॥ ॥ इति प्रमोदं हृदये दधाना चंद्रोदये नृत्यति च  
 क्रयाक्री ॥ ॥ १२॥ ॥ **अलं वंधातिशयोक्तिर्पथः ॥** ॥ जितमनोजसरोजं विहोयना तनु रमे परमे पुरत  
 स्तथा ॥ ॥ नक्रमता कनता यत ह्यो यने मन मुदे स मुदेति मना गपि ॥ ॥ १३॥ ॥ **अक्रमातिशयोक्तिर्पथः ॥**  
 सारसा यत दृशो दृशोऽपथा शैशवस्य ययसो विनिर्गमः ॥ ॥ सत्कदाश्च परिचोक्षणा गमः पश्य चित्रमपजत्त  
 रं सनं ॥ ॥ १४॥ ॥ **चपलातिशयोक्तिर्पथः ॥** ॥ प्रपातिरुद्धो मधुरा मिती रिते पयस्य वा कापितथा कृशा  
 ऽभूत् ॥ ॥ पथांति कस्यामपिता म दृष्ट्वा पराजयं विस्मयमापचिंतं ॥ ॥ १५॥ ॥ **अत्यंततिशयोक्तिर्पथः ॥**  
 अज्जायत स्नेह हता पुराऽस्याऽजगाम च किंच हृदा तवात्मे ॥ ॥ निरीक्षणं नंदतु तस्य सेकोर सेन पश्चादप्यवततं ॥ ॥ १६॥ ॥ **इत्यातिशयोक्तिः ॥ तुल्य योगिता पथः ॥** ॥ नते मसि प्रेयसि मुचमान मिती रिते जे पसि पं  
 जा क्षयाः ॥ ॥ चचा हजामापि चारु धारा विशा हने चान्न न सस्य मानः ॥ ॥ १७॥ ॥ **तारकारतिवितारकारकः**

तारमारचित कृतिमाहितः ॥ ॥ नारसार समसार वत्त फाटसा टवद नोपमानतां ॥ ॥ १८॥ ॥ **पथाका ॥** ॥ यः साधु  
 मुंचति न मुंचति वाऽस्वसंगं प्रस्तोति येन मति निंदति यः कृपाया ॥ ॥ यो हंति हंत हतधी दहितः सधीरः सर्वश्रुतेषु सनधीः समद  
 धिरेव ॥ ॥ १९॥ ॥ **पथाका ॥** ॥ विशा हजामा परिपीत हाजा भृंगारणा जा दितेव भाति ॥ ॥ त्वरा दृशो भाजित पक्षशे  
 भावा जापिचा जाप गुणा जवा हा ॥ ॥ २०॥ ॥ **पथाका ॥** ॥ मदिता मदिता पते सणा पि सणा मात्रेण मुखार विंद जगना ॥ ॥  
 मधुरा मधुरा जमानि भाजं रसि कं नो मदप्रत्यवश्यमेव ॥ ॥ २१॥ ॥ **इति तुल्य योगिता ॥ अथ दीपकं ॥**  
 पथा ॥ ॥ नक्षत्राहार कलितं कुलवामिनी रं सधामिनी मुखमिदं विदधाति रं ॥ ॥ सौदामिनी सन विभाग जगामिनी वंशे  
 दी ॥ ॥ जानंदपतिवा हो यमानंदपतिवा शशी ॥ ॥ २३॥ ॥ **पथाका ॥** ॥ हटति हसितमेतत्तत्त्विते शुभ्रकं त्पा हरति  
 च मुख शोभा शीतरस्मि ज्ञांते ॥ ॥ अह रति तव नेत्र जात दृष्टं स्मरोनां अह रति पलमे कं त्वा पिना मे मगा सि ॥ ॥ २४॥ ॥  
 पथाका ॥ ॥ अपमुदपमुपेति वामिनी शो रनि रपते च रमा च तस्य चूडं ॥ ॥ इति हिंदिकुमुदं मुदं विभर्ति कृता दलि  
 महिती ति प्रिये मुंचमान ति नितं च मानिनि ॥ ॥ २६॥ ॥ **पथाका ॥** ॥ न दंति नेदा श्व न दंति कोका न दंति कोका गम  
 नेदिनोपि ॥ ॥ सुधाधरो सा यधो धरा पां प्रिये तजं द्य सुधाधरः खे ॥ ॥ २७॥ ॥ **अथ प्रतिपत्तम् ॥**



८५

[illegible]



पा हित नाजि नंतं मेहशरंशं रुमादिदेवं ॥ ॥ स्मरो वशी कर्तुं मयं प्रयत्नः प्रसूनकारोपितनुर्वक्ष्य ॥ ॥ ४॥  
 ॥ ॥ **परिकृतं कुरो यथा ॥** ॥ चला मतिस्तु कंतं न्यौ मदन कंतं ति लोतमं ॥ ॥ वामं कोनु वशी कर्तुं  
 शक्तः स्यात्तशक्तिमानपि ॥ ॥ ५ ॥ ॥ यथाया ॥ ॥ विशारदाशा रदचंद्रवज्रेन शारदा ले समता मु  
 पोति ॥ ॥ सुधा तु हा मेति नचायरस्प चुधा वंदंतीति मुधान चैतत् ॥ ॥ ६ ॥ ॥ **अथ श्लेषः ॥**  
 प्रशा दपा व कृतिता गोपा हो गोप वंदितः ॥ ॥ श्रीमान् रपिनाय कोपेतः कामदो मोक्ष वोऽवतु ॥ ॥ ७ ॥  
 श्लेषवित्तो मत्कृत श्रीं ठा नरो होयः नैष गौरव भपा नात्र मपा हिरिते ॥ ॥ यथाया ॥ ॥ सदा रामे  
 ता तदशः सुमनो गण शाहिना ॥ ॥ हा दमराग नुगतेन त्वं द्विज संमदकारिणा ॥ ॥ ८ ॥ ॥ **महिम्न**  
 तो लोचमहो दद्यान्ति कृता भिमर्जैः कुमुदं पिकारापनं ॥ ॥ मगादिचिवां परधारिहारिषामां मुखं च  
 वेति चारु राजा ॥ ॥ ९ ॥ ॥ **अथ स्तुतं प्रशंसं पथा ॥** ॥ सुंदरं सुरभिः सो शंपे पश्यंस्ति महतरं ॥ ॥  
 स लेचं दन संत्वा ज्यो मुजं गम कु संगमः ॥ ॥ १० ॥ ॥ **अथ स्तुतं प्रशंसं पथा ॥** ॥ ~~सुंदरं सुरभिः सो शंपे पश्यंस्ति महतरं~~  
~~महतरं सुरभिः सो शंपे पश्यंस्ति महतरं~~ ॥ ॥ **पदा मित्रिते उरतो रतो राने वपस्या च सुतु**  
**विदुषा चो ॥** ॥ स सा रसा र निगम रुतारा नारा धितारा तरुणी हरस्प ॥ ॥ ११ ॥ ॥

॥ ५

॥ ६

कृताशतं वर्षति मेधना हा द्विषंति भेकाः शिरि नो नंदति ॥ ॥ ज्वलंति चारा कृतं हंति पाताग हंति यं  
 गानि क्रिमा जपामि ॥ ॥ १२ ॥ ॥ दत्ता पति मां पुपंती च हत्वा वि योगः त्वमम सं हरेधिः ॥ ॥ श्लाघ्यः स  
 पू ज्यो भुवने स ए वपरा त्परः कोपि महा न्यन स्वी ॥ ॥ १३ ॥ ॥ यः कामदो भूति वि भूषित श्रान्त्या पु  
 तो यश्च कृता वगाही ॥ ॥ **अहीनहारी पुरुषो त्तमो यो गंगां विभर्तीति स एव सुख्यः ॥** ॥ १४ ॥ ॥  
**अथ यथा पोत्तं ॥** ॥ कुचद्वयीते जघनं निरीक्ष्य स्तौति निवा सस्प मुले गजस्य ॥ ॥ म देन कुं तस्पर्क  
 रस्य पाहे त्पत्तश्चिरं रूढि मुपागतोपि ॥ ॥ १५ ॥ ॥ यथाया ॥ ॥ कृम हा नयना यवाम्प हं सर  
 सी कामिनि कामि सन्निधौ ॥ ॥ स्थिति मेहि सु संगमेन जाते हवही कुं जग हं तरे सुरेन ॥ ॥ १६ ॥ ॥  
**अथ यथा जलुति र्वया ॥** ॥ हित्या गजं दिक मश्व जाते स्वरणि दिभू वां च विहाय गंग ॥ ॥ **अहीनरपि च**  
**तुं वषभेन गं तु भोक्तुं विषं कृत्स्नपि देपिम ज्जेत ॥** ॥ १७ ॥ ॥ यथाया ॥ ॥ तीक्ष्णै र्वै रीष हरे रदनै रती व  
 कृतापि दूति कुचयो श्वरुपो हपोथ्य ॥ ॥ रिपन्ता सिना स्ति महिना व मुत्तपुति स्ते धन्वा सिता ह सम हो ज  
 थवामि श्रिते ॥ ॥ १८ ॥ ॥ **अथ निंदा यथा ॥** ॥ स निर्वापिता तापि पातापि देतो नु निंदा शि  
 नो पापि संतापिता रिः ॥ ॥ नयेनो दरा नै ना शशि न्याचित स्त्वं निपीतो गसिन द्ये उपधेन पापि न ॥ ॥ १९ ॥ ॥



**जा दे पो यथा ॥** ॥ अथ पिप्पसि सं पेशं मेति रुचिता विवि विस्मृत वसी किं ॥ ॥ क्रो वा त पात्र दोषो भुरति प  
 रं सत्य हृदया सि ॥ ॥ २० ॥ ॥ यथा जा ॥ ॥ शं तो स्वा मि न् पु रा दे रु डि ग र ह मि दं कं र को रो नि धा तु  
 गो ते ग्नि नाग म गो ऊ र ज न र स पु शा ति ए स्त पि गो स्त ॥ ॥ वा रे प्य स्मि न्न स स्मि प वि रु न ति  
 वि रु द्ध ~~नी नु~~ मु दा सा ने तैः किं न चो मि न कि म पि म ग व न् रु न ते ये र व रो सि ॥ ॥ २१ ॥ ॥  
 यथा वा ॥ ॥ रा का सु धा नि धि स म य द नं स्व की यं तं मु द्र प पि प त मे ध व गुं णे न ॥ ॥ य न त्प वा न रा सि  
 का प ह यः पु रे ऽ स्मि न्ने ते च को रा त हा ण इ व स च रं ति ॥ ॥ २२ ॥ ॥ कै वा ध का क्ष ति रि पं ती स का श्च रं तु का  
 न य पे ष म सि ता य त चा ह ने त्रे ॥ ॥ ची ते च को र नि को रे र म्भ ते सु धा रो र धा पि हो रु पि पि तो ध म्भ तो  
 शु रे व ॥ ॥ २३ ॥ ॥ **पु म् ॥ ॥ अथ पि रो चा भा सः ॥** ॥ अ गो प ति गो प म व त्तु म क्तः स गो प ति  
 जी प त ए व रं भो ॥ ॥ त्व द र्च ना दे व त प ति लो को नि मे ष पं तो प्य नि मे ष पं तः ॥ ॥ २४ ॥ ॥ वि रो ध स्प  
 द रं भि न्न न क्त की कं वा म रो णो जा तः ॥ ॥ **वि रो धो क्ति र् यथा ॥** ॥ द पा म य रा पा पि ता न य च रं द  
 च क्षा धि के स ति त्व पि स ती प तो रु क्त ल क्त रि ज्ञा त रि ॥ ॥ अ दं द्रि त हा सं गि नि हि ज्ञा रे नि रा  
 सं गि नि सु धा ति ह र ण द नं न फ ल मे ति चि जं म ह र ॥ ॥ २५ ॥ ॥ यथा वा ॥ ॥ त्व पी न पं च  
 रि मि तु अ धि तं प पि प्पा पी नो ह मे ष इ द म्प य मो ज सि द्ध ॥ ॥ ना पो म वा म्भ म पि को त्त प किं को रे

॥ १० ॥

तार  
 च र तं सु प म स द स वि हो त्प ना हा द र्कं मु त्ते दौ ॥ ॥ श र ति रा स्ता मि नि तु च्छे मे व क्ता नि धौ क्ता मि  
 नि का हि मा ऽ धि कः ॥ ॥ २७ ॥ ॥ **अथ यत्नोक्तिः ॥** ॥ यथा ॥ ॥ पा र द स्प स ह वा रि ण ऽ ग त ह  
 रि ना रि ज ह रो ह रो ऽ ग त ॥ ॥ य च ह च प ह वा स न ह डि ज रा वा पु र त व स्पु नः पु नः ॥ ॥ २८ ॥ ॥  
 यथा वा ॥ ॥ किं चि दि हो ह न र मा न न मु द न म्प स ता पी क्ते हा रा प रं प र वा नि री क्ष्यो ॥ ॥ द  
 द्वा हि मे ऽ पि ति रि ति चि द्दी र्घ पू नो सा र्ध म नो नि र न गुं ह त्वा च रु धी ॥ ॥ २९ ॥ ॥ **अथ विरोधोक्तिः ॥**  
 ॥ ॥ ३० ॥ ॥ **विरोधोक्तिः ॥** ॥ यथा ॥ ॥ को हां वि ना भा ति न गो ह रा हां वि ना जा ह  
 ॥ ॥ ३१ ॥ ॥ **विना भाति ॥** ॥ ना भा ति पा जो पि पि न ऽ न म द्वा वि धो च पि धा चि न य वि ना च ॥ ॥  
 ॥ ३२ ॥ ॥ यथा वा ॥ ॥ वि ना वि का रं सु म नो म नो र मां त नो ति त न्नी प ति तं वि ना रु चि ॥ ॥ पि भा ति  
 गो षे ण पि ना प्र पेः कृ तिः अ पि श्च रो षे ण पि ना क पि ज मः ॥ ॥ ३३ ॥ ॥ **अथ यत्नोक्तिः ॥** ॥ यथा वा ॥ ॥  
 पू जि तः ॥ ॥ ग क्त्वा पु ष्प व ती मे तो म धु प त्प न ह ऽ ज सि ॥ ॥ ३४ ॥ ॥ यथा वा ॥ ॥ र पा ना स मे ति स म पा  
 ति क मा त्म ~~गो हं~~ ते च क्ता रु द पि तो त्व ज च क्ता रु ॥ ॥ ज्ञा तः पु न त्त व त्त पि ष्प ति सं ग मो ऽ स्मा वि  
 द्वा ग मे स ति प तः क्नु का र्प ति दिः ॥ ॥ ३५ ॥ ॥ **अथ यत्नोक्तिः ॥** ॥ यथा वा ॥ ॥ सु धा च रा ते म धु र ग्नि री  
 तो ऽ च रो ति पी तो व सु धा र मा पा ॥ ॥ स रो ज प चा प त लो च ना या म नो ज न्ये पि नि ह ति ता पो ॥ ॥ यथा वा ॥ ॥ किं कि न

॥ १० ॥







[illegible]

11734

५११

हमेतादृशी गतिमुपैमि पिरु कृमेतर ॥ ॥ २६ ॥ ॥ ॥ इति श्रीमद्भागवतस्य चं चमी  
तामिः सप्तमोऽध्यायः ॥ ॥ ज्ञेय विद्यायता ॥ ॥ विनांग रागेन तवांगे सुगां  
लाक्षां च विनैव रक्ते ॥ ॥ पादारविन्दे रविन्देनेत्रे विनांगे नैव रमिन्दं चनी हं ॥ ॥ १ ॥ ॥  
पद्माका ॥ ॥ होक्षारं जित मायतासि कृतेपेपि राधरते ॥ सुगं प्रातर्भातकनी निरुचनय  
नरपामपि ना कृज्जले ॥ ॥ स्वर्णजंकरां विनैव सुचिरात्वं मे सुरापा पत्रिपेका स्त्री रद्वयम  
रेव सुरमिरपामे तवेदं वपुः ॥ ॥ २ ॥ ॥ यथाका ॥ ॥ सरुहका रुहपा ॥ वहापा दृशा ॥ राक  
मेतिहा ॥ ॥ ३ ॥ ॥ यथा ॥ ॥ मेखे ॥ ॥ ज्ञान मरुडितं तत्तपश्च शान्तिश्च जितेन्द्रियत्वं ॥  
स्त्री संग मेपि जमयाधिप स्वस्मरस्व जेतु त्वमहं तमीडे ॥ ॥ ४ ॥ ॥ यथाका ॥ ॥ पाका  
शातो ॥ जायते कापि वल्ली मल्ली पत्रो रंजपुरादधाना ॥ ॥ स्वाणुप्रसक्ता च चकीत्स्वपणी  
दत्ते फलं पूर्णमिदं पिचित्रं ॥ ॥ ५ ॥ ॥ यथाका ॥ ॥ राकारांशं कृमिमहं प्रसमीक्ष्ये जातेप  
रस्मि वदने पुज्यो रिजाराः ॥ ॥ ६ ॥ ॥ उज्ज्वलपिजारा विधिनिशापामुपय नृत्पतिमुदाहितं जरीटः ॥ ॥

ਪਾਇਰ

١٤١



नो मुदेमं जुमरं दनघः ॥ १० ॥ न धां च न धां हि मशीत गंधो गंधे च गंधे भ्रमरी सुनृत्यं  
 ॥ ११ ॥ नृत्ये च नृत्ये च कलस्य रोपं ह्यरे ह्यरे चारु हयानु चरति ॥ १२ ॥ हृये हृये काम क  
 लाः कला सुक हासुरा गो मदिता यतासि ॥ १३ ॥ रागे च रागे कृतगीतिराक्ता गीतौ च गीतौ च वि  
 लासना एतौ ॥ १४ ॥ वा रागा च वा रागा परिहास पूर्ण दो हागतानां रमणी जनानां ॥ १५ ॥  
 हृष्टा स एव प्रमदे मदे कृजिये मुदं तनुते हृदो मे ॥ १६ ॥ चतुर्भिः कृता पदं ॥ १७ ॥  
 पथा संख्य पथा ॥ १८ ॥ कृता धरं कृत्वा तत्कृत्वा मुखस्य देहस्य पि होचनस्य ॥ १९ ॥ जयति वान  
 र्दपमा द्येन मानेन संतर्जयि मानि नित्यं ॥ २० ॥ पर्वपथे पथा ॥ २१ ॥ त्यक्तं मृदुल मुरसा च पथा  
 गृहीतं मुग्धत्वमापि न दनेन हृदि सिद्धं ॥ २२ ॥ पादपीत रत्नतां विजृम्भे नभार नेत्रद्वयं वृत्त  
 नो रतनोः प्रभारात् ॥ २३ ॥ शाब्दः पर्वपथे पथा ॥ २४ ॥ कारीति रक्षा तयजो ह नत्र  
 कामोपदिष्टा प्रतिभाति कृते ॥ २५ ॥ पूर्वदरेभ्यो तसि चारु न के माना हृये यो वसति कृ  
 द्यात् ॥ २६ ॥ सफा च पथो यो पथा ॥ २७ ॥ प्रिया पराध्वं प्रेय रो न मो नो विरु  
 ढि मा सा हृदि यो हिते ॥ २८ ॥ नेत्रे य पादप्रसाते मुकुंदे शनेः समानो पितृषु

१३

त  
स

जगाम ॥ २९ ॥ वि कृता पर्वपथे पथा ॥ ३० ॥ हाप राधे प्रिये पूर्व प्रिये मानो  
 हृदि स्थितः ॥ ३१ ॥ अमुना नयने वाचि सर्वांगे व्येष दृश्यते ॥ ३२ ॥ स त्पो नाहिरात्  
 त्मकी कृतज्ञा ने कृतज्ञो सोऽभ्य को मास्व मनो रतिस्त रता ता प्रीता व मे दो सु सोः ॥ ३३ ॥  
 देवेक्ष न शनो वि होचन पथं नापासि यत्तत्तस्य संग स्या त्म रते ते रापि कृये जास्तं गता  
 श्री पते ॥ ३४ ॥ परिचरति र्यथा ॥ ३५ ॥ रसेन पाद्ये कुसुमेन चार्घ्यं दत्तेन संपाद्य  
 न वासनं च ॥ ३६ ॥ समागता पाति यथे हृये ज्ञ की ता न धा कीर्ति रियं त्वये च ॥ ३७ ॥  
 ॥ ३८ ॥ अथ परिख्या ॥ ३९ ॥ मे का गुणा गुणा वता गुणै रत्न भूषते ॥ ४० ॥ रां करस्य  
 कथा पयो दा रा दा कथानि ॥ ४१ ॥ वि कृत्वा पथा ॥ ४२ ॥ ज्ञीति हृत्ता मय  
 का प्रिये मा कुलीनतां चामदनं गता ॥ ४३ ॥ यथा रुचिः प्रेम पिथो त व स्या त्पथा चरत्य त  
 र हापतासि ॥ ४४ ॥ समाधि र्यथा ॥ ४५ ॥ पावत्त्राण मे च व ह्यु वाग्भिः करो  
 मि पत्तं कृदि हापतास्य ॥ ४६ ॥ मानो पनो दा पदयोः सकाशे विवंचन मासे स्य हृता च  
 पिदोः ॥ ४७ ॥ समुद्रयो पथा ॥ ४८ ॥ आधाय राधा त्वे पिमाधनय स्नेह समा राध्य  
 विपागता ॥ ४९ ॥ समेत मूर्च्छा पितृ पत्य ज्ञे त नोति दुःखं प्रहपत्य चरं ॥ ५० ॥

न



79811

三











तिर

अनंकरां गी चकार मंदा नि ह म ग न सं स्था ॥ ६६ ॥ ॥ ज्या जोक्ति र्पथा ॥ ॥  
केत की कुसुम चै मि ध्रुवं चूत रा मि स रि प श प तां ज तं ॥ ॥ क ए के न कु च को र का पि  
मौ लं डि लौ च र द न द्धु तै हि ना ॥ ॥ ६७ ॥ ॥ गू ठो क्ति र्पथा ॥ ॥ रक्ते पंच पि प मि  
नी त्व दु द ये मो पं द धा ना भृ शं जे म्ना प म वि हो च ने न ह स ता त्या भी क्ष ते सा द रं ॥  
ए तां त त्व म पि प्र भो नि ज क रै र्णा हिं ग्प तु धां कु रु जा पो र क्त ज ने नु रा ग गृ ह नं पु त्तं  
हि तं गो प तेः ॥ ॥ ६८ ॥ ॥ अ पं शो को म त्कृत नी ला व ती च पू ज यं चे जे यः ॥  
वि च्छे तो क्ति र्पथा ॥ ॥ र स प्र दा सौ म धु प स्य प मि नी वि भा व पू र्ण ज ह जे क्ष णा  
स रं रे ॥ ॥ नि वे द प त्पे ष ण दार चै र्प ना त्क पि तु सा कू त मि दं य चो ऽ मृतं ॥ ॥ ६९ ॥  
पु क्ति र्पथा ॥ ॥ र व्धो न रा ह्ये व्र ज ता घ सा प सं च द मा ते ति नि वे द यं ती ॥ ॥ त  
स्मि न्नु क्ष रो गी र्थ प ति व्र प स्था मा रे ति नि द्रा च ग ता नि शा च ॥ ॥ ७० ॥ ॥ दे को  
क्ति र्पथा ॥ ॥ स ती व्र तं स ती वे ति जा रि णी जा रि णी व्र तं ॥ ॥ पि शु नं पि शु नो वे

ति ला धुः सा धु व्र तं त रे ॥ ॥ ७१ ॥ ॥ व क्रो क्ति र्पथा ॥ ॥ का ऽ मा नि मि त्र द पि ता  
श नि मा न सा हो क्ता पा दि ने श त रु णी रा नि व त्स हा ते ॥ ॥ हे मि त्र व ज्र हृ द प्रां र म  
णी व दा मि ती रा नु षं गि हृ द प्रा र म णी त्व मे व ॥ ॥ ७२ ॥ ॥ का का य पा ॥ ॥ हि मो  
ज्ये हां गं च त त क कां गं शि रः प्र दे शो द य दं नु ग्रां गं ॥ ॥ क लो त मां गं मृ ति मू षि तां  
गं मृ त्त पो मिः स रि नै ष्य ती दं ॥ ॥ ७३ ॥ ॥ नि रु क्ति र्पथा ॥ ॥ मू त्या त्रि शू ली त  
प लो क मू ली भू तः प्र भो भू त प तिः प र स्य ॥ ॥ ज्या धिं न जा ना सि त्त तः प्र सि ष्ठः स्या  
गु र्भ ना स त्व मि दं प्र ती मः ॥ ॥ ७४ ॥ ॥ स्य मा वे क्ति र्पथा ॥ ॥ ज हां त रे वी र्य  
रा र त्तु धां शुं ग्गी तु मि छु स्त र ला प ता सं ॥ ॥ अ प्रा प्य तं मा तृ मुरं नि दी र्य कि लै  
लु ष्ठ नं प लु तो रो द ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ता वि कं प था ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ लो क्षा रं जि त म घ  
रु दं चा सी दि दं तु प र मा मि ॥ ॥ सा का कु र्वे ता रा न्च र्त्तु व दो ज पु म ते ॥ ॥ ७६ ॥ ॥



गुरुपदेशादिशदस्य रूपं भागेन संभावितपातपातं ॥ ॥ संभावितं भाविभवेत्तु कृत्याम  
 व्यप्रपक्षाभिमतं न जेत ॥ ॥ ७७ ॥ ॥ उदात्तं यथा ॥ ॥ पुटीपुरादेः पुरास्वपूरेः प्रपू  
 रित्ता पूरितपत्रिपुजा ॥ ॥ मणीं मा गीतं न मता एमा हा यस्या विशा हा नि ज सति रा हाः  
 ॥ ॥ ७८ ॥ ॥ तंगत्य सति महतां उदात्तं यथा ॥ ॥ सा रा चिका ॥ रा चित सिंधु क  
 त्या न नो पि वेदे रूपगीपमानः ॥ ॥ विहा य वे कुंठ पद पद स्वाः पा दां पु जं ता रि हरिः  
 पपात ॥ ॥ ७९ ॥ ॥ क्रतुक्ति र्पथा ॥ ॥ न न शी लु स्य ॥ ॥ स्वर्णि हां कार कर्णी भरणा य  
 ह पिताः स्वर्णि पर्णा म पर्णा पूर्णा स्या मेतु कर्णाऽपत न य न पुगाः स्वर्णि पर्णा मि रा माः ॥ ॥  
 एभा दं भा पहा भाऽन त व स न पुता ना पि का या च का नां जा ता स्ताः काम व द्यः सति म यति पि  
 गो दा न शी ल स ती रा ॥ ॥ ८० ॥ ॥ रू र लो तुक्ति र्पथा ॥ ॥ त्व ते जो द ह नै र्ज हं द्वि र पि कुं ड  
 ग्धां पु ये स्त त्प यो पं चे न दि षे दि च ने न म हा ता पिं डी कृतं पा क्तः ॥ ॥ ८१ ॥ ॥ मुक्ताऽऽ कंठ म सी म मि  
 षु सु र मि त्ती भू प ते नि त्प राः क्षी रं भो नि धि वा सि नो न र य रा ग वं ति की र्ति स्ति य ॥ ॥ ८२ ॥

॥ ८२ ॥

रुचमत्कृता सि व द न श्री मि त्ति त्थं प्र माः ॥ ॥ ८३ ॥ ॥ नो के ना रि व ह ना ग रेः प्रति गृहं हा तो  
 न न दी क्षित त्थं को यं मुर व मे त दि त्थ म न हं स ऽपे ति धा मा हि तिः ॥ ॥ ८४ ॥ ॥ वि  
 रा व को यथा ॥ ॥ हरिं स मा रा घ पि तुं ग ता पा दे वां ग ना न्ना थ रा धि का याः ॥ ॥ मु यि  
 नि मे धै र्रं ज यो षि त स्ता जा नं ति जा ना ति त्पा ऽपु तो पि ॥ ॥ ८५ ॥ ॥ सू र्ध मं यथा ॥ ॥  
 ज्ञा रो शि तुः पा णि त हे नि री क्ष म वि री क्ष ज कु र्छ मं भो ह ह मा ष ता क्षी ॥ ॥ वि ह स्त पि  
 चि द्वि नि मी ति ता सं कृ तां ऽ सिं मं दि र मा वि षे श ॥ ॥ ८६ ॥ ॥ गू णे त रं यथा ॥ ॥  
 र ना त रं य नि कुं ज वी थी त मा हा ता जी व कु हा व ही नो ॥ ॥ न त्रै व हे पां य नि दा य का हे  
 म ध्या रू का हे सु त रा स रि त्ता ॥ ॥ ८७ ॥ ॥ चि त्रं यथा ॥ ॥ का मा ता को म हां ग श्य क  
 पि ति तं यथा ॥ ॥ तातः पतिं एहा गतं सा मा धे भ म स्वे द क रं पि तां ग ॥ ॥ ८८ ॥ ॥ कर ग ही त्पां य



[illegible][illegible]



ता ॥ गचि ते नैव पदं करोषि कृपणः किं पञ्चनालोसि वा दसे नैव न हा ५५ ॥ सि जि जगतां ना कोसि किं क  
 महेता ॥ ११ ॥ ॥ आगत्य स्मरतो न कं जरपते वै कुं वै कुं तत्तर्णं चंद्रमुत्पी पिता म क म लो मुक्ता र म स्फा क  
 रो ॥ ॥ वारं वारं मुदा रत्ना रनुतिभिः श्री हार संतापितो प्यात्मा धार म यान तु ध्यु सि विभो किं पञ्चनालो  
 चित ॥ ॥ १२ ॥ ॥ क्रे षां लोचन गोचरः कृत युगे ना भूः स न्नो न वा त्रेता यो म पिता व की जन पुरे  
 व्यक्तिः श्रुता द्वापरे ॥ ॥ राधादि ब्रज सुंदरी पद युगे स्त्री पं शिरः स्थापितं दोषः को नु कले रत्ने प म दित ५५  
 ते नैव ५५ गोचरः ॥ ॥ १३ ॥ ॥ वेदा य स्प गुणा ५५ ॥ ति न पुनः पार ह भंते पं राधायाः पद पं  
 क जे नैव पति त्रे लो क्य ना यो पिसः ॥ ॥ स्मार स्मार मिदं विचार क हितः सु दूत दो ला मितः  
 कि राधा विनु मो नु मो नु म हितं किं प ञ्ना नां विभुं ॥ ॥ १४ ॥ ॥ य न्ना भ्यु वृज तो वि र चि र भ ज  
 त स्मा त्रिं सो की त हंत न्म ध्ये ब्रज वासिनः सु कृति न स्ता भ्यो पिते सां स्त्रि यः ॥ ॥ य षा पा द  
 सरो रुहे कृति शिरो भागा स्थितं तन्म जो ध्ये पं स त्सु ल भं म हत्तर म ॥ श्री प ञ्ना नां विभुं ॥ ॥  
 १५ ॥ ॥ कामं काम कला कला प वि रुहा दृष्टं कलां स कृत्वं स्मारं स्मार म हो म हो ज्ये न म हो र भं म

तः

प्रतिषेधोपधा ॥ ॥ न का ह कूट न न चो प हने न न व ह्नि ना ५ कारि र प हो व य स्व ॥ ॥ किं त्र त ती क  
 र वि कार भावः र प हः स हने नैव वि निर्मितो ५ ति ॥ ॥ ८२ ॥ ॥ वि ध्य त्वं कारो प धा ॥ ॥ हे ना  
 त हो च न पि शा त्र पि मो च ना प दुः र प ह्य मे कु लु म का रा व रोग ना पाः ॥ ॥ दा हं कृ त त्व म घु ना  
 म घु ना स है व सं हार कृ र्त्तु रत नो र सि ते प पा ध ॥ ॥ ८३ ॥ ॥ हे त्व हं कारो प धा ॥ ॥ न्न प म पं र  
 ज नी पति रा गतः सु त नु मा न नि यन्ति कृ ते कृ ती ॥ ॥ त्प जे हं त नु तं नि म नो ज नः जि प म भुं स रि व  
 र स्त नि ज स्मि ते ॥ ॥ ८४ ॥ ॥ प धा वा ॥ ॥ ल दू मी भ रा गो कु ल स न्नि वासि ना रु पा कृ पा साः क  
 म हा वि लासिनः ॥ ॥ आ नं द धा रा ब्र ज प्रो वि तां तु ते त ए व भो सः पर मा त्म वे दि ना ॥ ॥  
 ॥ ८५ ॥ ॥ आ लं का राः स रा न्ति ह स्ति ता रा इ य म पा गु रो दा रा धा रा वि ग हित वि कारा  
 वि र चिताः ॥ ॥ र सो ह्ता सा वा सा वि नि हित वि का रा उ म ल प दा पु धाः सं रो ध्ये ता न पि प ध त सु कं  
 ठे सु कृ ति नः ॥ ॥ ८६ ॥ ॥ ॥ इ ति श्री भं गार रा ला पां त्रि वे दि सु कृ पि स र्वै र प र वि र चिता स  
 त्ता मी सं गिः स मा ति भ ग म त ॥ ॥ ॥ शु भं भू वा ह्ये र प क स्य पा ह क स्य नं थ क र्त्तु म ॥ ॥







22

होवे ह्येवं ॥ ॥ सारं सारसभासमाक्षमसमाकाचित्समागोपिकातारं सारं सारं सारं सारं सारं  
 पशो भातं तदासीन्महः ॥ १६॥ ॥ कदाच्यत्यं क्रमदास्यदत्तं ताराधिपत्वं रुचितासितत्वं  
 समानमिंदोत्तयिचेश्वरं च दयाधिकेशो विभुताचभूतिः ॥ १७॥ ॥ कुमुदवंधुरं च पुरतिप्रभः कु  
 मुदेहदेति मुदममा ॥ कुवहपं वलपन्निजोचिषा कुवहपं दलपन्निहचिचिषा ॥ १८॥ ॥ क  
 जाभूषितविग्रहः सुमनसो वंदेन संसेवितो रक्ताशोक्रमनोरमाहिविहसत्संतानसंभावितः ॥ १९॥ ॥ क  
 मानंदकरो वियोगवहितो यो मंजुधोषा रजो गोभोगी न हितस्तनो तुलहितं पः सर्वदो माधवः  
 ॥ १९॥ ॥ साधि काहारे मुपां निराधिकासाधिकाय जनतापवाधिका ॥ काधिका मद्रुपाप  
 राधिका राधिकारतिरमाधिका मुदे ॥ २०॥ ॥ राजीवो जत पांडुरद्युति रजो राजीविरारंजितः  
 कोकीकोकिलकोककं कुरतीको जातहैः संकुलाः ॥ २१॥ ॥ सर्पद्वर्षकद्वर्षकोर्षकतमरंभाः सरंभा  
 यो कासंती नहिता विषागलजिता वासंतिका वा सराः ॥ २२॥ ॥ समंजुगं जाधतपुष्पं  
 जामिह्लिदं गुजारजं गुजिता च ॥ २३॥ ॥ रसालजालाविलसत्प्रजाला रसालजालानमुदंति कल्प ॥ २४॥



23

शारदेऽत्र समये विशारदो है मरष समयो विशारजते ॥ शीत कुंद हृत्कृत्वा कुर्यात्पितो यत्र पुरापच  
 रिफा कृपा हितः ॥ ३५ ॥ तथा हि ॥ औद्धतं तनुते निरुति नितरां दैतं सुपिं सपिं दासूतेशीत हतांत  
 नोति हृदये हृदस्य सत्ते मतः ॥ यदांत स्पविचारो जसु भोगो है मंत का हः प्रभुः प्रमान् पत्र  
 विभाति वाते च महतर शैत्ये कसं न्मपि ॥ ३६ ॥ है मंत संगत हव प्रसरत्प्रवृत्ताः संराजते सं  
 राजते शिशिर एष मनः सुरपा य ॥ कुंद प्रसून निकरै हिस तीप मंत जे जो धरं दिन करं नि ज के नि  
 का हे ॥ ३७ ॥ पञ्चानां विस्तौ विपोग कलिताः पुष्पं च पाः साधवः संजाताः शिशिरे मरंद  
 निकरैः कुंदेन पतपिताः ॥ तन्मन्ये कुसुम ह्वलेन विमहा कुंदे पुतत्पुरापतः कीर्तिः प्रापितु  
 पुष्पिता विस्तसति प्राहे परस्मि प्रभा ॥ ३८ ॥ नितोंत कांताः कुटिला हो कांताः काम स्पकां  
 तां इव देव कांताः ॥ रतांत तांता न तु दुःख तांता लंति पस्मिन् विपिने हतांताः ॥ ३९ ॥ नीपाव  
 हापितंति हका वजीति ज्योत्सं च मं जु सुरा रुनि कुंज पुंजं ॥ न्येना च शा हा कहितं हहितं हो  
 तांतं तन्मंदनं वन मुपार मुद विभाति ॥ ४० ॥ कल्याऽरव मेधं रात क्रोडि धापीता दी शत क्र  
 ति का थं प्रमं जं किते पं ॥



तुरपंदनु जांतकारी ॥ वफ्तुन ह्यो कपतिः सुराणो पतिः जमायी च भुनक्ति भोगान् ॥ ४१ ॥  
 तह्यो काफि कते कते ससु रुते पित्रा पपो मानवा अग्नि वेम मत्पादिकर्म सुरताः केचित्प  
 यो भोजिनः ॥ केचि दानविधान कर्मनिष्ठाः चेता पुगे द्वापरे सत्मा त्पु एष पथेन गच्छत  
 कृहो तह्यो कृगं का स्तिचेत् ॥ ४२ ॥ नो चेद्ये तसि मेन का सुरता कां क्षातदा कूपतांत  
 स्मिन्न गपि भाति विमहा सा नुचयी भा नुभा ॥ सा देवचितयी चि हो कर्महिता वेद चपी संस्तुता  
 तत्रास्ते स दुपासनाति सुहाभातं चोदिता स्रुतिः ॥ ४३ ॥ मोक्षे का पदिये तसि स्फुरति तन्मध्य  
 गं का च न भंगं तारतं स मस्ति विम हं नो तो य दी पः श्रुतः ॥ पीषूषा विच्यंत दूर्ध्वं शिखरं  
 कृष्टपद्मे राचतं न हाता निगमागमे रपि मिति र्पस्या द्रुते पत्त पा ॥ ४४ ॥ सुचं नु ये न ध्य गतो  
 मही पाने रूषो मही पाने शिखरो गति तास्मिन् ॥ सुर दुमा स्मं ही छतः समं ता तं दंत राक्षे च कंदं ययी  
 यी ॥ ४५ ॥ जा को रेणा द्रुष्टं सुवर्णं स्पे ज संयतः ॥ यो जना वधि पन्म ध्ये समं ताग्निः कृष्णः स्थिताः  
 ४६ ॥ तया हि ॥ यत्र प्रथमे प्रोकारा भ्यंतरे ॥ एको गणो गुणगणो ह्यसितोऽतरा हो प्रो ह्ये पर

स्व २

२४

जंघात का ह्ये छत हं स मा जा सरो ज जा जित का स पत्न्या ॥ शरद्वयुय शुचि जीवना सा पीस्मिन्म  
 पपो दुपपो धरा स्ते ॥ २३ ॥ नो पशर द्वाग्ने ॥ स्वच्छं वरा सति ज का छत हं स का जी  
 कालीन का पि सुम नो गण से व्यमाना ॥ गोरो ह्ये स द्युति ॥ पपो च द्यारिणी पं सं राजे त  
 ति जलितारा रं दुजा सी ॥ २४ ॥ सनिष्कु प जा हित भं गमा हा प्रसून जा जं चित शा ज शा जा  
 पि भा पि शा जा पि ह्य सत्प्र का जा पि भा ति जा जं कि त पत्र शा ला ॥ २५ ॥ गं चो द्वासित सार सा पति  
 रसा सा एज पा पाहिनी रुध्रां मोघर भा जिनी च सुमनः तं शा जिनी सा हिनी ॥ कामो ह्ये स कुरी पि हो  
 च न च री त्त त्र भा पा परी का स जी न गरी गरी पसित रा ले पं रा र त्शो भते ॥ २६ ॥ अपि च ॥  
 गंध व्या न प ना ति निः सह म हं मं पत्र पा ते रमी हा ल्यै व स्म र सं मं दे क जननी कु ह्यो सरो जा व ही ॥  
 गा पं ती र व हो म मं जु नि नं दे र्म गी र मं दे स पं मा ज त्या न चु पा न म न्त मं दु पा गुं जं ति कुं जो प रे ॥ २७  
 मं पं मं पं मा ज ती पं मं रं पं पा पं पा पं स च रं तो र वि दं ॥ पं री पं री स मं पं पं पं तः कुं जे कुं जे मं जु गुं जं ति भं  
 गाः ॥ २८ ॥ यस्मिन् स्थले पं नि ज रा ज हं सी मा र क्ते चं न चु पा न मं तां ग ल हं तं चं न ति रं



पद्मप्रपराः ॥ वातोद्धृतसरोजराजिरजसापंड्रकृताः सोजतं पद्मपेतरितोहरंति हृदयं सापंसमस्ताः पु  
 नः ॥ पद्म ॥ किंच ॥ गुंजति ममराधमंतिपरितः पद्मावहीनाममीमं पंमयेपरंदकणिकापोनेनमत्ताभ्य  
 रौ ॥ कोकली चसरोजिनीदहतत हृदयं च कोकजिपंनोदृष्टममिमातनोतिपक्रिताकोहा हृदयं कुर्व  
 ती ॥ पद्म ॥ किंच ॥ कुह्योभोजपिलोचनैर्विकारितैरक्ता रविमणिनी दृष्टापंकजपुजपोदुरजोभ्य  
 जास्मिन्तं तन्वती ॥ स्थन्धुतस्वमोहो ज्येष्ठस्य च करैः पुष्पं च पालीमिवात्तुभंगं रंजकपी करोति  
 किमुसा प्राणैरक्षरस्यो जनतः ॥ पद्म ॥ वनमाजीवमाहीतः सुमाली गोपसंतुतः ॥ वनमाहीन  
 चपलासंगतो गणपकः ॥ पद्म ॥ तदग्रे च सत्तमप्राकारे सौवर्णे ॥ सौवर्णे वरणास्त्रिहो कथा रं  
 दीपानितो निर्मितो वाजाकी पुतकोपि क्रान्तिरुचिरः शाखा सहस्रो ज्येष्ठः ॥ संता नहुम ताहिनी सु  
 हाजिता पुष्पावली माहिनी पस्मिन्नेम हातावनी विजगती प्रेमप्रपा राजते ॥ पद्म ॥ वीची पादुचये  
 सुधां वुषिपुजाये लावघू पीतनुं संपरपत्तिवपत्रमीनन यनैर्नित्यं समाहिं गति ॥ सायजापि विनम्रदेव  
 विदधिनामात्मकैः पाणिभिः स्वीये स्तं जलधिं च नीरपतिनैराहिं गती वज्रिपं ॥ पद्म ॥ तदभ्यंतो

२५

पद्मं शुद्धस्फटिकराकहैरंतराले प्रपातैः सापाना ली सुधाचिततघिशोममनैः सरस्तत् ॥ शांता  
 कोरयमलममृतस्यातवत्सज्जना नाशो जं पस्पप्रचुरीतनवत्स्यादुमोदं विधत्ते ॥ पद्म ॥ तं सापत्र  
 चरंति चातगतिभिः सौरव्यसुरीणामपि स्याते संजनयंति संतिसुरिवनो पस्मिन् विहंगाः परे ॥ तारीत  
 निहंति मंदमहायोगं गुंजति पुष्को किलागायंति ध्वनिमुद्यंति चरुकाः कूजंति कोपध्वजः ॥ ६० ॥  
 पत्तीरस्य तमाला ता हाति हाको तुंगा नशाखा वली छापा कुलविषत्त हेरविमना होयत्रि योमा  
 धिपा ॥ कोका ही सुधितापि नातिपिसिनी कंदं पृष्ठा र्त्तापिनो पानी यं पिपति जिपामपिन कालिं ग  
 त्यनंगादिता ॥ ६१ ॥ केलीतिः कलिताः कंदवशिरपरे केजिप्रजाः केकपः कर्णानां जनयंति सौव्यममि  
 तिकृत्पाणरूपाः कहां ॥ यचश्चुपुटेन चासुनिसिनी कंदं स्पक्रोदिमुपाचं स्पधमतभ्यकोरहातनाभ्यु  
 नंति प्रत्पूरगाः ॥ ६२ ॥ कहां कलं कलं सगणाः कचित्कलरयंकलपंति रुकाः कचित् परिपंति च  
 कोकलाजितास्तहकुलापगताः किलकारिकाः ॥ ६३ ॥ मं पारो पारशाखा सरससुमनसौ माहरंतः  
 सुगंधान् रौजोरोहापरो हस्तमशिविलज्जवाः स्पर्शदी स्पर्शशीताः ॥ सायं जातः प्रशस्ताः कुसुमशरसे



२६

लतासिपेरं तपूरेवीचीरं पो हपंतो मनसि सुमन सं गंधका हापंतति ॥ ६४ ॥ म ह्मी व ह्मी असूने ज  
 हितमचुरसो ज्वा रं गंधे रीपा नुतुंगे म्मुं चंद्रप्रकृति तसुरस्त्री ऊचरो हनेन ॥ रिवन्नेः छिन्न श्यतस्म  
 त्परितमवतरन पिछिलात्संपत सनपो पूषा मोधिपातापतिशिशिरः रं सनीरो विचते ॥ ६५ ॥ एन्मी  
 तन्नयमं जरी नचुरसा स्वा पो हसन्मान सो म्मत भ्राम्यदति प्रजाति हहितो मो जमिपा हं कृतं ॥ ६६ ॥ की  
 जसक्तकुहा परता कहा हंसा त्पंत मो पा व हं मे पा र्दुम वाटिका व हापितं पत्पत्य हं रा जते ॥ ६७ ॥ सा के  
 स्वा नुगता भिरा भिरमितो भं गीति रा कं पितैः पक्षाणां निचये विता न स दुरौ रा द्वा पयंतो डवरं ॥ ६८ ॥ मं पारे  
 मकरं दशा हिति न चो दता वधाना मं पं मो पं सं ज न पं ति य च नि नै र्मत्ता मि हिं पा क्कमी ॥ ६९ ॥ त द्वे सं त स  
 भी प ए व र चिते जां वून दत्ता म ह्ये मुक्ता वि दु म ही र नी ह मा णा ति श्चि त्री क ते मं ड पे ॥ ७० ॥ द्वारे क ह्य त रु मि पा  
 तु हा हिते म्मुत्पुं ज प स्वा मि नः से ना न्या च ग णा धि पे न फु जि ता मूर्ति श्य सो मा स्ति सा ॥ ७१ ॥ त द्वार मा र्गे  
 न च क ह्य वृ क्ष रा र वाः प्र पि ष्ठा श्य पि न म्प त स्य ॥ ७२ ॥ अ म्पं त रे मं ड प य न्म हे रा दे वो परि श्ची त हि ता ल सं ति ॥ ७३ ॥  
 ११ गुं ज न्मं गु मि हिं प चं द म चुराः स न्मं द्रु धो वार वा जा ती जा व र सा ह रा ह नु कु ह स्तो मेः स पा वं धुरा गा र्णे च्चा पे

जाधिजाः कपिपितिशारदीयाः कपिचिं मताः ६  
 अपिरो शिराः सुखक्रयः कासति काकासराः ६

सि पदना सम हं कृतो ऽस्ति ॥ पन्निः कु य व न कृते सु कृते न पूर्णः पूर्णो ड्कोटि स म शु द्ध ह विः शु चि श्य ॥ ७४ ॥  
 त दने जा प स म पे जा को र द्वि ती ये ॥ का ही प दां पु ज म धु य त ए क ए व शा ही न ता ह हित चं द्र मुखी  
 सुरा हा ॥ प स्पा व ना प नि य तं नि प मा नु सा री तारी गो णा ग क व रः सुर व रू प जा स्ते ॥ ७५ ॥ त द  
 नि त्ती पे अ ष्ठा तु म ये जा को रे ॥ दा मो द रो ष म त नु रि त नु ज मा र्णे मा नो न्तः सु त नु दा र्दु तो म ही पा  
 १॥ र स्तां को र ति पि त नो ति सु खं म वा ज्येः पा रं ग मे ग णा व रं ह पं ग म र य ॥ ७६ ॥ त द ने च तु र्थे रं ग म  
 पे जा को रे ॥ मे ह न पु को न ह सा न मु को मु को प मं गी क त गीः सु मु क्तः ॥ पु को प मं भा ति शि वा नि पु को ग णा  
 प्र भु स्त त्र पि भु त्र पु क्तः ॥ ७७ ॥ त द ने प च मे ता म्प्र जा को रे ॥ तो म्प्र जा का र पूर्ण प त पि त त त रं ज  
 त देशे सु देशे द्वी पे त त्मि न् वि शा हे र पि व र त रु मिः शो भ मा ने स नं ता त् ॥ शु द्ध स्तां तो ऽति कां तो ग णा ग  
 णा न्प तिः स्वी प कां ता स मे तो हे तो त प्र क्ष ण स्तै ज भ व ति वि ह स त्पे क को लो ग णा र्थः ॥ ७८ ॥ त स्म  
 ज न तः र ज त जा को रे ष ष्ठ ॥ पी पू ष स र सी ले का रो भ ते प त्र शी त हा ॥ प स्पां की ऽति वि ह ग वि हं गी मिः  
 सं मे स माः ॥ ७९ ॥ सा रं गा प त हो च ना ए व नि ज ज्ञे यो वि यो गा तुराः पु ष्पा णां मि ष तो म नो ज वि शि रे ये







सन्निर्जिते दुर्गाभा सारसं सावित्रे ॥ नासि कानिर्जित कीर्तिने केले ककेलु हतुं उभाग जगते नी  
 लपद्मे लोणा ॥ त्रुजितो नराचा पद्मभा ॥ सत्जना जाल भागा जमा या हय ॥ ५१ ॥  
 नीलके शोचनी च्यात संदो ह ससा धित स्थित पले प जभा भा त्व रस्म रत मोह नास  
 तिसं मोहि ॥ त्या ॥ सहोचने दक्षिणा चोद पंदे पितु भवेन माः ॥ ५२ ॥ तुपन जन निचाह मं पार हार  
 चती गुं फिता नाग दारा मिता येद सारा जमी सन्म सारा ॥ ५३ ॥ जगता उदारा मम स्या ततारा भवंतु  
 रा च्यात धारा हरतु जभा संकिरंतु सुता मं जु सिंदूर पुताः सुमुता वही संगता पित्रिपेणी भिषं सव  
 ति प्रमोदं दत्ते पमा मोद मग्ना मन्यं चरी कृत्स्व शंभोः प्रमोः कापि भा ह स्पती वा ह चंद्रो ज्य हा  
 रत्न जा हो हृत् सत्त ज्ञां कून दो प्रासि सत्पट्टि कार कतिंदूर पूर प्रभा सूर्य चंद्र धुतिं धार पिते पते  
 भा कुत तज पती जपती हयती च संतोष मत्पत म ह्यो मि हे रा स्व भ ता वही नै म हा काम मं प प्र  
 सा पंद दत्ता प्रचितो पुजे त्व दुयो कार्मु कभी धरे नी ह रत्ना वतं सान्विता हे मतां क संशो मिता कृति  
 पाश दपी हो चना त ह्य निक्षुसा कां तु कृता मे व संती मनो मं दिरे काम हो भा पि पति प्र जो दं धि का चां

२८

ते ह्य रमार्गेण त प्रागतः सा संपेक जा निर्म ह नी र धारा ॥ तं स्नाप पित्वा गिरि शं च गौरी तपा ह का हं परिपूर्ण  
 भाति ॥ ७१ ॥ तत्क ह्य पृष्ठा पपि पुष्प चंदं सैव शंभो ह परिप्रया होः ॥ सह म पुष्पेः पतति प्रज्ञा तं मा  
 रम्पता प सत् चित्र मेतत् ॥ ७२ ॥ कृपाति सा नी र ज नी र धारा स पुष्प पुजे ति विचित्र मेतत् ॥ मन्य म ह  
 रा स्प पदानु पागा तना पुज्य मे वै ति शि ये न नि त्पा ॥ ७३ ॥ तत्रैव पुनः ॥ हो का हो क म ही धरे रा धरणी वा  
 को पित्वा कांचन जाकारेण समंततः परिचृतं ह माद्रि भं गै रिव ॥ प्रा सा दीर्ग रिग हरे रिव पुतं हे मै नि कुं जे  
 स्थ तं पा ता हो रि प निर्मिते स ह ग हे श्वे तो न क स्या उ हरे त् ॥ ७४ ॥ तद्र ह कः को पि म हा न मन सी म हा  
 प रा सी भ ग वा न स ह दः नि ज स्त्रि पा सा र्ध म न र्ध्व शी हो ग गो म हा त्मा उ त्त त थै व त त्र ॥ ७५ ॥ एत त्स्म  
 हा व धि पि रं चि ह री दु दे प मुर व्या म रा व ति मु नी र व र स ह ति श्य ॥ अ ने न को पि न प ना न पि त त्र वा  
 ति ना स्ते ग ति नि प त मे त द वो ह स त्व ॥ ७६ ॥ ॥ इ ति श्री वि वे दि स र्व र व र सु क वि वि र चित अं गार  
 शा हा वा म षु मी नं गिः स सा ति म ग म त् ॥ त स्य प्रा का र स्या भ्यं त र ॥ वे दै र्ना क हिते न वा परि चिते तं ज  
 ग मे स्त र्ज तो उ हा जे ता र्जि क सां र्ग्य रा स्य नि र ते यै शो धि कै र्यो गि मिः ॥ त त्व ज्ञा न र तेः प तं ज ति म ता पि षे  
 स्त प्पा ज्पा त को व द ना च र का पि मि श्य मु नि निः सं वी क्षिते त त्व तः ॥ १ ॥ न पि क्षु ना च ज त पि क्षु ना पि



सनाधिः सुचासिं धुलं भासिनो मंजु लोचनं कृष्णं वसिं दूर पूर प्रमो द्रासि पञ्च जस र्चन्महा हस्त  
शोभां पद्यते तुङ्गं धा पुगं नूपुराणी त्वनाकर्णो ना कृष्णमा हरण रत्नानां मं द्विद्वयां भो जमेतन्म  
मत्वा तन्मं ग स्य ततो षकारिणि मं मेद पातु जिपं मे करो तुममो दं वरं येद विधां वि मुक्तिं सु मुक्तिं सु  
भक्तिं कपितं सुपत्तं त्वं मंतः स्थिरत्वं महत्वं द पा तुत्वं मे न द्विजे बुजरा धत्वं मे पं त्य मे नासि माता वि  
तात्वं च सर्वं मे मे धा र्य पासित्वं मे नातिं छारिणि पये मो द कारिणि पये तारहारि एष ये दे विता रि एष  
ये प्राप्ता मे तं जनें पाहि पाहि ज्ञो पा हां कते श्री स्व रूपे स्व धा स्तु पिण्ण की स्व रूपे सु रूपे वष  
द्वार रूपे मे हरा नि कूपे गुणा नां म हो न स्व रूपे महा बुद्धि रूपे महानीति गोहन हारांति प्रा सा  
दी हये चित्त्वं देहि जो धो पं दे वि तु पं न मः ॥ सु रन र वर दे स्तवे न सु ता जे न रां भु जि पे  
सुा स्थि रां वर्ध पत्वं जि पं भक्ति पु क्त स्प नित्पं ॥ त्व दा राध को दे पि चित्त्वा ध को ना व सं सा भितः  
कोटि ना धा पतः सा धु सै रज्या प हस्यं प्र चरु जि पः सुंदरी रां जि पः जेन वारां नि धिः र्दे वि धा व धि स्तो ति  
तो को हितं पो कि कृ जां त नो ति ध्रुवं ते ध्रुवं तं तु पं ति ध्रु वा धाः जि पं त स्प दे वाः अ कु र्पं ति नित्पं ॥

महाराजराजेश्वरी राजमान्येश्वरी राजपूज्येश्वरी त्वं यथा राजसे राजराजेश्वरी राजमान्येश्वरी  
राजपूज्यो नरो राजगणेशो नरो राजचन्यो नरो राजते ते तथा भक्ति पुक्तः सुखी सेव क्ते न दुःखी  
कदाचित् च नी किं क रस्ते न रं कः कदाचित् प्र सन्नो जन से न सन्नः कदाचित् सु भो गी न रस्ते न  
रोगी कदाचित् न रि ष्ठा जन से न दुःखः कदाचित् न रि ष्ठा न रस्ते न कृष्णः कदाचित् सु प्र  
धो जन से न दुःखः कदाचित् रक्ष मा ते तु भ त्तो प नी सं प नी योग पु क्तो जन से न रक्ष  
तु पा गी स पा ते तु पा सो न तु धी पि पो गी नि रा राः कदाचित् यो दे वा कदाचित् त दा सो पि मु क्तः  
स तु प्र ण रूप सु री पः स एव प्र भुः सार भूतः श्रु ती नां स एव दी प स्त्रि हो की सु वं धो वृ निं धो हि  
व दा र्का स्त स्प भ क्तः कि न न्य द्वि हो की त हो वा ठ न गणो पि ध न्यः शर एव स्व दी पो महा भक्ति मे  
तो हि सं तो रितं स त्प मे त द्दं ति ज मा णं भ वा नी भ वा र्च नु र क्तः सु भ क्तान सी पं ति हो जे न सी पं ति ते  
कु ला नि श्रि पो ना व सी पं ति ते षां व हं नै व सी प त्प मे धा लु ते ये द वि धा य तं साः ज रां सं ति सं तः सु प  
ति ध्रुवं ते कि पं तः कि तो नी ति म न स्तु स तः स दा जा प ते ते ध्रु पि धा च ते षां कु ले सं ता ते व र्ध ते सो र



दारापदरासंतिक्षितौ कीर्तिधाराप्रसारस्फुरंति स्तुतिर्नैव तेऽन्यस्य कुर्वति भक्ता भवन्त्यामवस्य स्तु  
 तिर्धैः कृतात्त्वत्कपेवात्र हेतुस्तत्रार्थैव सत्कारणं तावकी नानुति सत्रवीजं त्वमेवासिमातर्गुणं हं कृता  
 स्वयं भक्ता वलं वा विहो कीर्ततां वा विहो कोपकारे प्रपुक्तासि प्रपुक्तासि मुक्तासि मुक्तिप्रदा मुक्तसे  
 पिता मंजु मुक्ता कृता पातु मुक्तिश्चिरात्परात्ता पुरा प्रपुक्तासि समाना समाना गुणा ना विधा  
 मंजुधाना प्रपुक्तासि चकारी त्वमेवास्य वंती विहो कीर्त हस्य प्यंती न पंती संपदा नवान्न स पंती च  
 दुष्का नृपा द्वारिकासि प्रपुक्तासि तांगी कृशांगी च सांगीतविधा प्रसंगी रतने कभक्तासि कांची स्वस्व  
 चकांची दुधाना प्यपो ध्यासि पो ध्या न संति विहो कीर्त हं नरो वा नरो वा सवो वा प्यहीनो वरं वा भवं भक्ति  
 पुक्तेऽप्यंती सदा मायमासि मायां न हेश स्य माये मधो ह्यं पुरी कापि पिशांति माता जगाम मंजु कुर्व  
 ति पतेषु मा नंदतासि जिया देवता नां च पञ्चा ह्या पञ्चनामस्य संपां करोति ध्रुवं पञ्चनिध्या पञ्चः सन्निधिं  
 ते प्रया ता विरं चि प्रपा स्तुर्प कांता पि कांता त्वं धी सदा सेवते ते ज्यमाने सुराणां न हेश जिये जेम वारा  
 निधे देवि मातः प्रसन्ना भवतां प्रपुक्तासि नित्यं सदा देहि को धो दप देवि तुभ्यं नमो देवि तुभ्यं नमः

३०

जनेनां जितेरां करे रंजिते श्रुत्पुपां ता चिते से ज्यमाने श्रुतिव्या जतः किं श्रुतिव्या भूपे हो चने दुःखं  
 मोचने स्पंजरीं सुरो जगानि मीनं न नो जस्य वाणं जिया चाप हन हि पा संगतं कुर्वतो नासिका मो  
 तिकं पंत वा सज्जि पा रंजित की रतुं सुविं च चतां नृह सद्दीप्ता शुद्ध रगावती मिषधी पूषधा  
 रेवमाचा प्रपुक्तां शिशो रा नने वा हतु ह्या मरा नृमा ग्यमा जो नये त्वत्प्रसा दी कता चेदि मां देव  
 देवः पिता संस्थेः स्वजसां विदध्या न्मुखेऽस्मापिते पं भवत्पा सरो जे का एका ह कूटस्य ते स्तोत्र  
 रा त्वे प हंतु स्यं स्वी करो त्वं व स स्यं मुक्ता कृ हापो ज्य हा कं प ह्यो विरा ह्या हते व स्मृ ता ता  
 प हं ची रप हा नां नि पं श्री च मंत्री पतं चादि मंत्रा जिये मंत्रा सिद्धि जिये सिद्ध मंत्रा भिचे मंत्रिता पाप हं मं  
 च विद्या फलो ह्या सति सिद्धि जिये देवि सिद्धे रवारि स्वर्ग तारो पुरा कापि तारा हिरेषा कुच द्वंद्व मंगारिता  
 मरुतां ह्या तर्गता फिर वागार ज्य पति द्वे सद्य पा मे त्व गंगा कृशा सविभा तित्तिया ह्युषित  
 मंजु मदार मा हा च ही चंद्रा रा नितं हे मंदा मा चितं ही रता रां कित चा ह्व स स्य हं नी ह मा रिण म  
 क पूरा रुषा प्रमा ता स्वर स्वर सिय कृती र प्रजे ना निते वा हु पु म ल दी प रणं कं क रा का रा ल पुक्त  
 मत्पत मंजु मंते कर हं मे तत्सरो ज प्र मं रत्त पुं जो ह्य स न्मुद्रिका मां गु ही पंक्त पः कापि कांची न  
 कांची पुते पं कटि स्तुति किं वा न वा त्वं त सदा ह मा रा प पंती न ये ती स य चे त सः स स्मृ ता चा ह ना भिः



तुभ्यं देवि नमो नमो परिदया दृष्टिं कुरु त्वं शिवे दासो हंतव्यो हरा जतनये दीनो स्मि हीनो स्मि च ॥ ॥ त्व  
त्सेवा निरतो रतो स्मि पदयोः स्वत्पूजकः प्रेमतः प्रापः सेव्यतोऽकरोति कुरु रां दीने पिहीने पिच ॥ ॥ १ ॥ ॥  
गिरा देव्या गीता सुहृत्त गिरा देव गुरुणा सुनीता हृत्पञ्जरि हरि विटं चिस्तुत पदा ॥ ॥ सहे रं वा चातुं न विहित वि  
तं वा शिव मपीति राहं वा हं वा जगति जगदं वा विजयते ॥ ॥ २ ॥ ॥ पञ्च पञ्च रणा पते वसु मती कं जं च गुह्यं  
पते स्निग्धः स्वकृत्यः सुवर्णं कदली स्ते भव्यं जं धा पते ॥ ॥ ३ ॥ ॥ शतं च पदरा पते शुचि धरो जको जगुमा  
पते रेखा सिद्धि सिद्धि भव्यं कं उरुमतः कं धा पते संपुतः ॥ ॥ ४ ॥ ॥ देवित्य द्रु कुटी हताऽति कटिता चा  
ता भा हं जभा हं कतं रोभा राति निशं भुक्ता मिनि शुभं तद्वा र्धं च प्रापते ॥ ॥ ५ ॥ ॥ अगोचरा त्वं मन  
॥ ॥ ५ ॥ ॥ श्रीमहा हं मणोः सुतेन कविना सर्वेश्वरेणा च्छुभं श्री हा जी पुरवा सिना विपथगा ती रे कुहो ह्ता  
सिना ॥ ॥ तद्गान जगुणा विवेदि कु हं जेना त्पादरा ही रभा पुत्रेण जग मत्समाप्ति समिता भ्रं गा रशा हा



शुभा ॥ ॥ ६ ॥ ॥ कृतात्मनुध्याभंगारशास्त्रसर्वेश्वरेण हि ॥ ॥ विद्वांसः शेषकात्मनः कृपया प्र  
 तपंतु ॥ ॥ ७ ॥ ॥ अतुपंचाष्टभूतकैरे उद्येप्रतिपत्तियौ ॥ ॥ द्विहोत्रस्य कृतिं सर्वेश्वरः सत्कृतिहेत  
 ये ॥ ॥ १८५६ ॥ ॥ ॥ इति श्री न्यायसिद्धान्तवेदांतशास्त्रि श्रीमद्विद्मणि गुरु प्रसादपरि  
 ब्राजप्रतिभा जेतिष्ठितेन न्यायतर्कसाहित्यचारंगमेन हृदयंगम नीतिविद्याविशारदका रं चंद्रो  
 पमपशः पारदस्वश्री हाहा मणो सानुजन्मना उकृपिका सर्वेश्वरेण विरचिता भंगारशास्त्रा ॥  
 समाप्तिमगमत् ॥ ॥ शुभं भूपा ह्येव पारदरूपैः रं यकत्तुभ्य ॥ ॥ शुभमस्तु शिष्यसाधन  
 न्यायधरणा रविंदपुगहं चाता विधत्ते कृतिं धत्ते नागपतिः प्राप्स्य भवती मेतां महीभूद्विनि ॥ ॥  
 ॥ ॥ १ ॥ ॥ आस्पृश्यामसरोजसुंदरदशोभत्या सुधांशुनिजं जेपांसं विषदं गणा दुर्बलितं दीपावली  
 जातः ॥ ॥ किं नक्षत्रपरंपरापिमि हनायासं प्रियस्वसितं न जानाति सारिकेव निपतं



मन्त्रासहेतव्यतः ॥ ॥ २ ॥ ॥ धनाध्यक्षो यक्षो प्रदजनितपक्षो दिविषतां विषक्षो पद्रक्षो भवविभवमक्षो भवमभज  
तः ॥ ॥ तदुत्कर्षेर्षे कृतकनक्रवर्षे तव रुपा जगज्जेतुर्नेतुः पुरमथ न हेतुर्विजयते ॥ ॥ ३ ॥ ॥ तुषारगिरिकन्यका  
पतिरिति त्वमाहोचितो गृहेन जनको जनैः सकृत्तल्लोकनाथः जगो ॥ ॥ अतोऽस्मत्तल्लोकचरः स्तुतिचये  
न चैतन्मतेत्यनुद्विष्टावितवस्तु नित्यपि मुधैव मुहं कृतं ॥ ॥ ४ ॥ ॥ गुह्यी सुरधुनीचरः किमुचरात्मजा बह्वभो  
मुनीतमनोचितः किमुतानिर्गुणोऽनामपः ॥ ॥ इतिलपि निरंजने सकृत्तल्लोकसंरंजने सुरारिगणभंजने स्तुतिग  
णोपितं देहनाक ॥ ॥ ५ ॥ ॥ चेपमाशैतस्तुतस्तदऽगमनुता पेप्राफारां भिजीहोपा ज्ञानवतां सता  
च सरणिर्देवा सुदृष्टिः शुभे ॥ ॥ हेपासंस्थिति सारसंपद रिष ह्याजेपामनः कल्पनाक्षेपाः जीगुरुस्तानिधौ  
स्तुदियसागेपागुणाः शीपतेः ॥ ॥ ६ ॥ ॥ दपावेत्ता सिलभगवति न हेत्तास्तु चित्तानि फलं कावेत्ता दु  
रितमथ येत्ता चरसुते ॥ ॥ रुपांरुत्तो कामं मपुपारिजहीपं जामपं मदीपं पारिं प्रेमिमुजन निरुं भापि  
दृष्टं ॥ ॥ ७ ॥ ॥ चनेन पूर्णास्तनपान्त्रिहायस्तेहं पिचने जननी तु तस्मिन् ॥ ॥ दीनोऽधनोपः सुतप  
षपं यामातर्भवत्यपि परीत एव ॥ ॥ ८ ॥ ॥ तुहिनि शिखरिभंगे भाति पः स्याणुरेकोपदमहत्तनुत्तनाच  
स्तरी कापणी ॥ ॥ निजमननपुतेभ्योऽः स्वमन्त्रहिजेभ्योचितरति फलमंभो सारूपं तमीडे ॥ ॥ ९ ॥ ॥



॥ श्रीरामो जयति ॥

॥ षड्विंशतिस्तस्य पुनः  
षोडशमेव च ॥ ईषते देवम  
से देवतं विदयमेव च ॥ १ ॥  
मीढुष्टमेति च चारिण दि  
शानरुद्रियम् ॥ १ ॥

109

श्री गंगारत्न ॥ १ ॥



॥ श्रीरामो जयति ॥

॥ षडष्टिनीलसूक्तचपुनः  
षोडशमेव च ॥ ईषते देनम  
स्ते देनतं विदयमेव च ॥ १ ॥  
मीढुष्टमेति चत्वारि एत द्वि  
शतं रुद्रियम् ॥ १ ॥

109

श्रीगणेशाय नमः